शब्दार्थ :-

शब्द	अर्थ
विचित्र	अनोखा
अंतर्यामी	अंदर ही बना हुआ
मधुर	मीठा
उद्यान	बगीचा
सस्ता	कम मूल्य
साफा	पगड़ी
चर्चा	किसी विषय पर बातचीत
पुलकित	प्रसन्न, खुश
स्मरण	याद
हानि	नुकसान
क्षीण	कमजोर
स्मृति	याद
स्वर	आवाज
स्नेहसिक्त	प्रेम से भरा हुआ
आजानुलंबित	घुटनों तक लंबे बाल
परिचित	जाना-पहचाना
चिक	बाँस की पतली डंडियों से बना झीना पर्दा
जायकेदार	स्वादिष्ट
चेष्टा	कोशिश
अतिशय	बहुत अधिक
प्रतिष्ठित	इज्जतदार
कोलाहल	शोरगुल

प्रश्न–अभ्यास

कहानी से

1. मिठाईवाला अलग-अलग चीज़ें क्यों बेचता था और वह महीनों बाद क्यों आता था?

उत्तर:- बच्चे एक ही चीज से उकता न जाएँ इसलिए वह बच्चों की पसंद आने वाली अलग-अलग चीजें बदल-बदलकर बेचता था।

दूसरा वह महीनों बाद इसलिए आता था ताकि उसकी चीजों में बच्चों की उत्सुकता बनी रहे और उसे पैसों का कोई लालच भी न था क्योंकि वह तो केवल अपने मन की संतुष्टि लिए बच्चों की मनपसंद चीज़ें बेचा करता था।

2. मिठाईवाले में वे कौन से गुण थे जिनकी वजह से बच्चे तो बच्चे, बड़े भी उसकी ओर खीचें चले आते थे?

उत्तर:- मिठाईवाले का मधुर आवाज़ में गा-गाकर अपनी चीज़ों की विशेषताएँ बताना, बच्चों की मन-पसंद चीज़ें लाना, लाभ कमाने के चक्कर में न रहना, बच्चों से अपनत्व, कोमल और प्रेम पूर्ण व्यवहार दर्शाना आदि ऐसी विशेषताएँ थीं कि बच्चें तो बच्चें बड़े भी उसकी ओर खिंचे चले आते थे।

3. विजय बाबू एक ग्राहक थे और मुरलीवाला एक विक्रेता। दोनों अपने-अपने पक्ष के समर्थन में क्या तर्क पेश करते हैं?

उत्तर:- एक ग्राहक के तौर पर विजय बाबू तर्क देते हैं कि दुकानदार को झूठ बोलने की आदत होती है। सामान सबको एक ही भाव में देते हैं पर पहले अधिक और फिर कम दाम बताकर ग्राहक पर अहसान का बोझ डाल देते हो।

एक विक्रेता के तौर पर मुरलीवाला तर्क देता है कि ग्राहक को सामान की असली लागत का पता नहीं होता है और दुकानदार हानि उठाकर सामान क्यों न बेचे पर ग्राहक को लगता है कि दूकानदार उसे लूट ही रहा है।

4. खिलौनेवाले के आने पर बच्चों की क्या प्रतिक्रिया होती थी?

उत्तर:- खिलौनेवाले की मादक मधुर आवाज़ सुनकर बच्चे चंचल हो उठते। उसके स्नेहपूर्ण कंठ से फूटती हूई आवाज़ सुनकर निकट के मकानों में हल-चल मच जाती। गलियों तथा उनके भीतर स्थित छोटे-छोटे उद्यानों में खेलते और इठलाते हुए बच्चों का समूह अपनी जूते-टोपी को उद्यान में ही भूलकर उसे घेर लेता और वे अपने-अपने घरों से पैसे लाकर खिलौनों का मोल-भाव करने लगते।

5. रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण क्यों हो गया?

उत्तर:- रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण हो आया क्योंकि उसे वह आवाज़ जानी-पहचानी लगी। उसे स्मरण हो आया कि खिलौनेवाला भी इसी प्रकार मधुर कंठ से गाकर खिलौने बेचा करता था और इस मुरलीवाले का स्वर भी उसी तरह का था। ये भी ठीक वैसे ही मधुर आवाज़ में गा-गाकर मुरलियाँ बेच रहा था।

6. किसकी बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया था? उसने इन व्यवसायों को अपनाने का क्या कारण बताया?

उत्तर:- मिठाईवाला रोहिणी की बात सुनकर भावुक हो गया था। उसने इस छोटे व्यवसाय को अपनाने का कारण यह बताया कि इससे उसे अपने मृत बच्चों की झलक दूसरों के बच्चों में मिल जाती है। बच्चों के साथ रहकर उसे संतोष, धैर्य व असीम सुख की प्राप्ति होती है।

7. 'अब इस बार ये पैसे न लूँगा' – कहानी के अंत में मिठाईवाले ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर:- 'अब इस बार ये पैसे न लूँगा' – कहानी के अंत में मिठाईवाले ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि एक तो पहली बार किसी ने उसके प्रति इतनी आत्मीयता दिखाई और उसके दुःख को समझने का प्रयास किया दूसरा उसे रोहिणी के बच्चे घुच्चू-मुच्चू में अपने ही बच्चे नज़र आए।

8. इस कहानी में रोहिणी चिक के पीछे से बात करती है। क्या आज भी औरतें चिक के पीछे से बात करती हैं? यदि करती हैं तो क्यों? आपकी राय में क्या यह सही है?

उत्तर:- हाँ आज भी कुछ पिछड़े ग्रामीण, रुढ़िवादी और कुछ जाति विशेष परिवारों में पर्दा प्रथा का चलन है।

मेरी राय में ये बिल्कुल भी उचित नहीं है। ये प्रथा न केवल स्त्रियों की स्वतंत्रता का हनन करती है बल्कि उनकी प्रगति में भी रूकावट उत्पन्न करती है। साथ ही इस प्रकार की प्रथाएँ हमारे देश की छवि को भी विश्व-पटल पर धूमिल करती है।